शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 05-11-2020, वर्ग - BA-III

सामरिक साम्यवाद के उद्देश्य तथा उनकी प्रति-
सामरिक साम्यवाद की नीति गृह-युद्ध के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट एवं सैनिक आवश्यकताओं का परिणाम थी। सोवियत सरकार ने प्रति-क्रांति (Counter Revolution) के भय से सामरिक साम्यवाद की नीति अपनाई थी, किसी सिद्धान्त को उपज के रूप में नहीं। इसका मुख्य उद्देश्य गृह-युद्ध के दौरान उपस्थित आर्थिक संकट का निवारण तथा सैनिक आवश्यकता की पूर्ति करना था। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उत्पत्ति के साधनों को राष्ट्रीयकृत किया गया तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ाया गया। जुलाई 1918 से लेकर मार्च 1919 तक लगभग 4 हजार कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया गया। कृषि पदार्थों के अनिवार्य अधिग्रहण तथा दुर्लभ वस्तुओं के वितरण की केन्द्रीय व्यवस्था ने शहरी जनसंख्या एवं सैनिकों का अस्तित्व बचा लिया तथा युद्ध के लिए आवश्यक सामग्रियों का उत्पादन सम्भव बनाया। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सरकारी नियंत्रण एवं प्रशासन के अनुरूप कई परिवर्तन किए गए। सरकारी विभागों के

लेन-देन में एक विनिमय प्रणाली लागू की गई, जिससे साम्यवाद के लिए मार्ग तैयार करने के सहयोग मिला। सामरिक साम्यवाद के दौरान अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों (कृषि, उद्योग, व्यापार, और श्रम) पर निम्नलिखित नियंत्रण लागू किए गए—

① कृषि — मौरिस डॉब के अनुसार "सामरिक साम्यवाद की प्रणाली का आर्थिक मूल (Economic crux) उसी सरकार का कृषकों के साथ सम्बन्ध था।" बोल्शेविक क्रांति के पश्चात सरकार की भूमि संबंधित आज्ञप्ति के परिणाम स्वरूप कृषि-क्षेत्र में जो सफलता प्राप्त हुई थी, वह अर्थव्यवस्था में उत्पन्न राजनीतिक दबावों के कारण समाप्त हो गई। कृषि वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ने के कारण कृषि उत्पादन हतोत्साहित हुआ तथा सरकार के लिये सामान्य प्रक्रियाओं द्वारा कृषि पदार्थों की वसूली कठिन हो गई थी। ऐसी स्थिति में सरकार ने अनिवार्य अधिग्रहण (Compulsory Requisitioning) की नीति अपनाई।

मई 1918 में जारी आज्ञप्ति के अनुसार कृषक-परिवारों के उपभोग तथा बीज के लिए आवश्यक उत्पादन को छोड़कर, शेष उत्पादन को निश्चित मूल्य पर अनिवार्य रूप से अधिग्रहण किया जाने लगा। अतिरिक्त उत्पादन की वसूली तथा उसे सेना, उद्योग एवं श्रमिकों के बीच वितरित करने के लिए 'आपूर्ति विभाग' खोला गया। इस व्यवस्था को गाँवों में लागू करते समय कुछ कठिनाईयाँ दिखाई पड़ी थी। अतः जून 1918 में जारी आज्ञप्ति के अनुसार ग्रामीण निर्धनों की समितियाँ स्थापित की गई। चूंकि अनिवार्य अधिग्रहण की नीति से कृषकों में असंतोष उत्पन्न हुआ। उन्होंने कृषि का त्याग किया, जिससे कृषि उत्पादन में भारी गिरावट आई। इस नीति से मजदूरों और किसानों के बीच मैत्री-सम्बन्ध अर्थात 'रिश्ता' भंग होने की संभावना बढ़ गई, जिसपर सम्पूर्ण रूसी क्रांति आधारित थी। अतः सरकार ने ग्रामीण निर्धनों की समितियाँ भंग कर दी तथा मध्यवर्गीय किसानों से पुनः मैत्री सम्बन्धों की स्थापना का प्रयास प्रारंभ किया। प्रारंभिक आज्ञप्ति को संशोधित करते हुए सरकार ने कृषि वस्तुओं को तीन श्रेणी में विभक्त किया।

(i) ऐसी वस्तुएँ, जो अनिवार्य रूप से तो वसूली नहीं जायेगी, किन्तु जिनकी खरीदारी का अधिकार केवल सरकार को होगा,
(ii) अनिवार्य रूप से वसूली जाने वाली वस्तुएँ
(iii) खुले बजार में बेची जा सकने वाली वस्तुएँ

इस व्यवस्था से प्रतिक्रिया स्वरूप किसान प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी की वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने लगे। इस प्रवृत्ति को रोकथाम के लिए सरकार को प्रथम और द्वितीय श्रेणी की वस्तुओं की संख्या बढ़ानी पड़ी। यह-युद्ध के अन्त तक शायद ही कोई कृषि वस्तुएं तीसरी श्रेणी में सम्मिलित रह गई हो। इस तरह, कृषि क्षेत्र में 'सरकारी एकाधिकार' की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।